IV षट्खण्डागम सूत्र के विषय-वस्तु पर प्रकाश डालें।

शौरसेनी प्राकृतागम-साहित्य के इतिहास के अनुसार षट्खण्डागम लोक नामक तीर्थंकर भगवान महावीर के सर्वोदयी उपदेशों का मूलस्रोत है। उनके प्रथम गणधर गौतम-गोत्रीय इन्द्रभूति जो गौतम गणधर के नाम से प्रसिद्ध है। उन्होंने द्वादशांग के रूप में महावीर के वाणी को निबद्ध किया।

यह आगम छह खण्डों में विभक्त है। जीवाट्ठाण, खुद्दाबंध, बंध सामित्तविचय, वेदना, वर्गणा, और महाबंध।

(1) जीवाट्ठाण — इसमें जीव के गुण, धर्म और अनेक अवस्थाओं का वर्णन आठ प्ररूपणाओं में किया गया है। ये आठ प्ररूपणाएं सत, संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर भाव और अल्प बहुत्व है। जीवाट्ठाण खण्ड की दूसरी प्ररूपणा द्रव्यप्रमाणानुगम है। इसमें बंधे हुए कर्मों की उत्कृष्टस्थिति का निरूपण किया गया है। इसमें जीवों के बादर और सूक्ष्म भेदों के पर्याप्त और अपर्याप्त भेद किये गये है। इस खण्ड में कुल 2375 सूत्र है।

(2) खुद्दाबन्ध → इसमें मार्गणा स्थानों के अनुसार कौन जीव बन्धक है और कौन अबन्धक का विवेचन किया गया है। इस बन्ध में 1582 सूत्र है। इसमें कर्म प्रकृति के बन्धक अधिकार के बन्ध, बन्धक, बन्धनीय और बन्धविधान नामक चार अनुयोगों में से बन्धक का प्ररूपण किया गया है। कर्मसिद्धान्त की दृष्टि से यह द्वितीय खण्ड भी बहुत उपयोगी है। इसका विवेचन ग्यारह अनुयोगों द्वारा किया गया है। इन ग्यारह अनुयोगों के पूर्व प्रास्ताविक रूप में बन्धकों के सत्व की प्ररूपणा की गयी है और अन्त में ग्यारह अनुयोग द्वारों की चूलिका के रूप में महादण्ड किया गया है। इस प्रकार इस खण्ड में 13 अधिकार है।

(3) बन्ध सामित्तविचय → इस बन्ध के स्वामी पर विचार किया गया है। इसमें बताया गया है कि कौन सा कर्मबन्ध किस गुण स्थान और मार्गणा में संभव है। इस खण्ड में कुल 324 सूत्र है। कर्म सिद्धान्त की दृष्टि से यह प्रकरण बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसमें प्रकृतियों का बन्ध, उदय सत्व, बन्धव्युच्छित्ति आदि का विस्तृत विवेचन किया गया है।

(4) वेदनाखण्ड → इस खण्ड में 1449 सूत्र है। जिसमें कर्म सिद्धान्त के 24 अधिकारों में से कृति और वेदना नामक दो अनुयोग द्वारों के नाम वेदना खण्ड बताया गया है। आरम्भ में मंगलाचरण किया गया है।

Scanned with CamScanner

इसमें निक्षेप अधिकार के नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव इन चार निक्षेपों द्वारा वेदना के स्वरूप का स्पष्टीकरण किया गया है।

(5) वर्गणा खण्ड → इसमें स्पर्श, कर्म, और प्रकृति नामक तीन अनुयोग द्वारों का प्रतिपादन किया गया है। स्पर्श अनुयोग द्वार में स्पर्श निक्षेप, स्पर्शनय विभाषणता, स्पर्शनाम विधान, स्पर्श द्रव्यविधान आदि 16 अधिकार से स्पर्श का विचार किया गया है। कर्म-अनुयोग द्वार में नाम कर्म, स्थापना कर्म, द्रव्यकर्म प्रयोग कर्म और भावकर्म का प्ररूपण है।

(6) महाबन्ध → बंधनीय अधिकार की समाप्ति के पश्चात प्रकृतिबन्ध, प्रदेश बन्ध, स्थितिबन्ध और अनुभागबन्ध का विवेचन है। यह महाबन्ध अपनी विशालता के कारण पृथक ग्रंथ माना जाता है।

Scanned with CamScanner